RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-08
August-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i08.043

पर्यावरण पर कोविड–19 का प्रभाव

Shweta Sonkar

Research Scholar , Department of Economics MGKVU Varanasi, UP (India)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 17 August 2020

Keywords
कोविड–19, लॉकडाउन, वायरस, संक्रमण, कमी, सुधार, पर्यावरण, महामारी, सकारात्मक

***Corresponding Author**
Email: skpremee100[at]gmail.com

ABSTRACT

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व कोविड–19 वैश्विक महामारी का शिकार है। कोविड–19 ने संपूर्ण विश्व के पर्यावरण में होने वाले दोहन को काफी हद तक कम करने का प्रयास किया है। इस महामारी से बचने के लिए संपूर्ण विश्व द्वारा लॉकडाउन किया गया जिससे सामाजिक दूरी से इस वायरस का प्रसार कम हुआ ही साथ–ही–साथ अंतराष्ट्रीय उड़ाने, समूद्री जहाजों के आवागमन, यातायात परिवहन, कलकारखानों के संचालन बंद होने के कारण कार्बन तथा नाइट्रोजन के उत्सर्जन में भारी कमी देखने को मिला, वायु प्रदूषण में कमी आई, जल की गुणवत्ता में सुधार हुआ, जैव–विविधता, जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत में सुधार देखने को मिला, वनों की कटाई में कमी आई, वन्य जीवों में कौतुहलता बढ़ा, खनिज संसाधनों के दोहन में कमी आई, प्रदूषण तथा परिवहन से होने वाले मौतों मे कमी आई। इस प्रकार, कोविड–19 का पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला।

विषय परिचय (Introduction)

''कोविड–19'' दिसम्बर 2019 में उत्पन्न कोराना वायरस डिजीज का प्रतिनिधित्व करता है। इस वायरस के सबसे पहले मामले की पहचान दिसम्बर 2019 में चीन में हुबेई प्रांत के वुहान शहर में हुई थी। WHO ने 2019–20 के कोरोना वायरस प्रकोप को 30 जनवरी 2020 को अंतर्राष्ट्रीय चिंता की सार्वजनिक स्वास्थ्य अपात स्थिति तथा 11 मार्च 2020 को एक महामारी घोषित कर दिया। वर्तमान समय में विश्व के लगभग सभी देश इस वैश्विक महामारी से ग्रसित है। संपूर्ण विश्व में लगभग 17.2करोड़ से अधिक लोग इस बीमारी से संक्रमित हो चुके हैं तथा लगभग 6.7लाख से अधिक लोग काल की गाल में समा चुके हैं। यदि भारत की बात की जाय तो लगभग 16 लाख से अधिक लोग इससे संक्रमित हो चुके हैं तथा लगभग 35 हजार से अधिक लोग जान गवां चुके हैं।

चूँकि यह वायरस के प्रसार का प्रमुख कारण संपर्क होता है। खांसने, छींकने से उत्पन्न छोटी बूंदों या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से वह व्यक्ति भी इससे संक्रमित हो जाता है। अतः इसके प्रसार को रोकने के दृष्टिकोण से विश्व के लगभग तमाम देशों के द्वारा लॉकडाउन किया गया। वैसे तो लॉकडाउन के कारण सभी क्षेत्रों आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि पर बहुत से सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव विश्व को देखने को मिला, परंतु पर्यावरण पर इसका सबसे अधिक सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

कोविड–19 के कारण संपूर्ण विश्व के द्वारा लॉकडाउन करने से अंतर्राष्ट्रीय उड़ाने, समुद्री जहाजों का आवागमन, देशों के अंदर यातायात परिवहन, कल–कारखाने आदि का संचालन लगभग न के बराबर हुआ जिनके कारण कार्बन तथा नाइट्रोजन के उत्सर्जन में भारी गिरावट देखने को मिला, वायु प्रदूषण मे कमी आई, जल की गुणवत्ता में सुधार हुआ, नदियों की स्वच्छता में वृद्धि हुई, जैव विविधता में सुधार, जलवायु परिवर्तन में सुधार, ओजोन परत में सुधार, वन्य जीवों में कौतुहलता, वनों की कटाई में कमी, परिवहन घटना से होने वाली मौतों में कमी खनिज संसाधनों के दोहन में कमी। इत्यादि कई सकारात्मक प्रभाव पर्यावरण, पर देखने को मिला।

कोविड–19 के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाला प्रभाव इस प्रकार है।

वायु के गुणवत्ता में सुधार

कोविड–19 के कारण हुए लॉकडाउन से वायु की गुणवत्ता में काफी सुधार देखने को मिला। यातायात परिवहन, कल–कारखाने आदि बंद होने के कारण इनसे निकलने वाली विषाक्त गैसे जैसे– कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि में भारी कमी देखने को मिला। चीन कार्बन का सबसे बड़ा उत्सर्जक देश है, लॉकडाउन के समय चीन में कार्बन उत्सर्जन में 25 प्रतिशत की कमी तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड उत्सर्जन में 50 प्रतिशत की कमी आई । इससे वायु की गुणवत्ता में सुधार पाया गया। अर्थ सिस्टम वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार कार्बन एवं नाइट्रोजन के इस कमी से कम से कम 77000 लोगों की जान बच सकती है। यदि वायु की गुणवत्ता में सुधार की बात भारत के संदर्भ में किया जाय तो जहाँ अक्टूबर–नवम्बर 2019 में राजधानी दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक (Air Quality Index-AQI) का मान 360 तक बढ़ कर गंभीर वर्ग में पहुँच गया था वहीं लॉकडाउन के समय यह 49 तक घटकर अच्छा वर्ग में पहुँच गया। वायु की गुणवत्ता में सुधार का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि लॉकडाउन के समय पंजाब तथा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से हिमालय पर्वत भी दिखाई दे रहा था।

जल की गुणवत्ता में सुधार

कोविड–19 के कारण लॉकडाउन से जल की गुणवत्ता में भी काफी सुधार देखने को मिला। विश्व के तमाम आर्थिक गतिविधियों में रूकावट के कारण जो प्रदूषित जल तथा उद्योगों से निकले कचड़ा आदि को सीधे नदियों में गिराया जाता था, वह लॉकडाउन के दौरान काफी कम हो गया जिससे जल की गुणवत्ता में सुधार आया तथा जल में रहने वाले जीवों तथा मछलियों आदि में कौतुहल देखने को मिला।

वन्य जीवों में कौतुहलता

कोविड–19 के कारण विभिन्न प्रकार के पक्षियों तथा वन्य जीवों में कौतूहल देखने को मिला। विभिन्न देशों की सड़कों पर जंगली जीव नजर आए। पहली बार पशु–पक्षियों को लगा कि ये जहाँ उनका भी है। मानव भय से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से पर्यावरण के अभिन्न अंग के रूप में विचरण करते देखे गए। कल कारखानों के बंद होने से धुँआ तथा विभिन्न गैसों के उत्सर्जन में कमी के कारण तापमान में कमी आई है जिससे ग्लोबल वार्मिंग में कमी आयी है तथा वनस्पतियों तथा जीव जंतु के लिए अनुकूल परिस्थितियों में भी वृद्धि हुई है। जल की गुणवत्ता में सुधार होने के कारण मछलियों तथा अन्य जलीय जीवों के प्रजनन क्षमता पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

वनों की कटाई में कमी

लॉकडाउन के कारण अवैध रूप से काटे जा रहे वनों की अंधाधुंध कटायी में रूकावट पैदा की। इससे वनों का लगातार किए जा रहे दोहन में कमी आई, जो जंगली जीवों के साथ–साथ मानव समुदाय के वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

खनिज संसाधनों के दोहन में कमी

विश्व के तमाम आर्थिक गतिविधियों में रूकावट के कारण खनिज संसाधनों की माँग में गिरावट देखने को मिला। खनिज संसाधनों की मॉग में कमी के कारण दो विगत वर्षों में पृथ्वी की सतह पर उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संसाधन जैसे– लौह अयस्क, खनिज तेल, कोयला, प्राकृतिक गैसों का जो अविवेकपूर्ण दोहन हो रहा था उनमें भारी कमी आई जिससे वर्तमान के साथ–साथ हमारी भावी पीढ़ी के लिए भी लाभप्रद होगा।

ओजोन परत में सुधारः

वायुमंडल के समताप मंडल में स्थिति ओजोन परत का कवच मानव जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, यह सूर्य से आने वाली पराबैगनी किरणों को रोककर त्वचा कैंसर, आंखों का मोतियाबिंद आदि रोगों से रक्षा करता है। विगत वर्षों में अनेक प्रदूषक जैसे क्लोरो फ्लोरो कार्बन (CFC), हैलॉन्स हाइड्रो फ्लांरोकार्बन (HFC) आदि के उत्सर्जन के कारण उसकी सांद्रता में कमी दर्ज की गई है लेकिन वर्तमान समय में लॉकडाउन के कारण इन ओजोन विनाशक गैसों के उत्सर्जन में गिरावट आयी है इससे उसकी सांद्रता में सुधार हुआ है, जो मानव सहित पृथ्वी के सभी जीव जंतुओं के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है।

परिवहन घटना से होने वाली मौतों में कमी

कोविड–19 के कारण लॉकडाउन से यातायात परिवहन के संचारण लगभग बंद हो गए इससे प्रदूषण में कमी के साथ–साथ सड़क दुर्घटना में मरने वाले लोगों की संख्या में भी काफी कमी देखने को मिला। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार विश्व में 1.35 मिलियन लोग प्रत्येक वर्ष परिवहन घटनाओं के कारण काल के गाल में समा जाते हैं। वर्तमान समय में इसमें काफी गिरावट अंकित की गई है।

प्रदूषण से होने वाली मौतों में कमी

लॉकडाउन के कारण प्रदूषण से होने वाली मौतों में भी कमी दर्ज की गई है। केवल भारत में प्रत्येक वर्ष 24 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु सिर्फ प्रदूषण के कारण होती है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है विश्व में प्रदूषण के कारण मौत का आंकड़ा क्या रहता होगा? कल–कारखानों के बंद होने से तथा मोटर–गाड़ियों के परिचालन बंद होने के कारण वायु प्रदूषण के साथ–साथ, जल प्रदूषण ध्वनि प्रदूषण आदि में भी कमी देखने को मिला। जो मानव समुदाय के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगा।

कोविड–19 के अगर नकारात्मक प्रभाव को देखा जाय तो यह कहा जा सकता है कि मानव जाति के लिए बड़ा खतरा है चूँकि मनुष्य पर्यावरण का एक अभिन्न अंग है अतः कोविड–19 के पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव के रूप में विश्व के 4 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु को देखा जा सकता है। एक व्यापक चिंता की बात ये भी है कि यदि ये वायरस जीव–जन्तु, पशु–पक्षी में फैल गया तो इनके भयावह परिणाम हो सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण पर कोविड–19 का बहुत ही सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। यातायात परिवहन, कलकारखानों के संचालन बंद होने के कारण कार्बन तथा नाइट्रोजन के उत्सर्जन में भारी कमी देखने को मिला, वायु प्रदूषण में कमी आई, जल की गुणवत्ता में सुधार हुआ, जैव–विविधता, जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत में सुधार देखने को मिला, वनों की कटाई में कमी आई, वन्य जीवों में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कौतुहलता बढ़ा, खनिज संसाधनों के दोहन में कमी आई, प्रदूषण तथा परिवहन से होने वाले मौतों मे कमी आई। इस प्रकार, कोविड–19 का पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला।

सुझाव(Recommendations)

कोविड–19 के पर्यावरण पर प्रभाव को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण विश्व को प्रत्येक वर्ष किसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था जैसे–WHO, WTO, यूनाइटेड नेशन के गाइडलाइन के अनुसार 15 से 20 दिनों के लिए लॉकडाउन करने के लिए प्रयास किया जाना चाहिए। इससे आर्थिक गतिविधियों में नुकसान जरूर होगा लेकिन विश्व के संपूर्ण जीव–जंतुओं सहित हमारे भावी पीढ़ियों पर इसका बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

References

[1]. https//www.who.int
[2]. https//www.covid19india.org
[3]. https//www.unenvironment.org
[4]. https//www.cpcb.nic.in
[5]. https//www.aqicn.org
[6]. https//www.springernature.com
[7]. https//www.economictimes.com
[8]. https//www.hindustantimes.com
[9]. The Hindu (News Paper)
[10]. Yojna monthly magazine (March,April,May & June,2020)
[11]. India Today monthly magazine (March,April,May &3 June,2020)
[12]. "Coronavirus: A visual guide to the pandemic". BBC News.
[13]. Burke, Marshall. "COVID-19 reduces economic activity, which reduces pollution, which saves lives". Global Food, Environment and Economic Dynamics. Retrieved 16 May2020.

RRIJM 2015, All Rights Reserved